लीलावती की बेटियां

भारत में महिला वैज्ञानिक

शुभश्री देसिकन

भारत में विज्ञान के क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं को कई प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से उच्च शिक्षा में प्रवेश लेते रहने के बावजूद देश में महिला वैज्ञानिकों का प्रतिशत 13 से 15 के बीच ही रहा है। कई प्रतिभाशाली महिलाओं को पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने से पहले ही या शोधकार्य करने के बाद भी उपाधि प्राप्त होने से पहले ही विज्ञान का क्षेत्र अनेक कारणों से छोड़ना पड़ता है। भारतीय महिला वैज्ञानिक एक-दूसरे के पक्ष में बोलने से न केवल कतराती हैं, बल्कि प्रायः एक-दूसरे का विरोध करती नज़र आती हैं। महिला वैज्ञानिकों के लिए आरक्षित पुरस्कारों के लिए आवेदन करने से वे इसलिए परहेज़ करती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे उनके काम पर एक ठप्पा लग जाएगा और माना जाएगा कि वह सामान्य श्रेणी में पुरस्कार पाने के योग्य नहीं था।

हाल ही में प्रकाशित अंग्रेज़ी पुस्तक *Lilavati's Daughters: The Women Scientists of India* (लीलावती की बेटियांः भारत में महिला वैज्ञानिक) में 98 भारतीय महिला वैज्ञानिकों की जीवनियां दी गई हैं। रोहिणी गोडबोले और राम रामस्वामी द्वारा सम्पादित यह पुस्तक, देर से ही सही, भारतीय विज्ञान में महिलाओं के योगदान की स्वीकारोक्ति है।

सवाल है कि इस पुस्तक को महिलाओं द्वारा अकादमिक कार्य से पलायन के समाधान की दिशा में पहला कदम क्यों माना जाए? इसमें ऐसा क्या है जो इसे सामान्य रूप से लिखी गई जीवनियों से अलग करता है? वर्तमान में समाज में प्रचलित पूर्वाग्रहों के खिलाफ इसे क्यों एक प्रभावी हथियार माना जाए?

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका प्रस्तुतिकरण बहुत सरल और सीधा-सादा है। इन जीवनियों को पढ़कर ऐसा लगता है कि सम्बंधित व्यक्ति स्वयं या फिर उसका कोई निकट सम्बंधी या मित्र सामने बैठकर उसके जीवन की अंतरंग कहानी सुना रहा हो। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि इस संग्रह की हर जीवनी पठनीय है। इस पुस्तक को पढ़ने के बाद भारत की युवा महिला वैज्ञानिकों को प्रेरणा के लिए अपने देश में ही पर्याप्त अनुकरणीय उदाहरण मिल जाएंगे और उन्हें मारी क्यूरी या सोफिया कोवालेव्स्की या एमी नेदर या सोफी जर्मेन जैसी किसी विदेशी महिला वैज्ञानिक की ओर देखने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

भारतीय समाज में महिलाओं के बारे में कई पूर्वाग्रह प्रचलित हैं; जैसे वे पुरुषों के बराबर काम नहीं कर सकतीं, या उनका व्यवहार एक निर्धारित सांचे में ढला होता है, या वे निवास के अपने मूल स्थान को छोड़कर अन्यत्र जाना नहीं चाहतीं, या वे चुनौतियां का सामना नहीं कर सकती आदि। इस संग्रह की प्रथम नौ जीवनियां पढ़कर ही ये सारे पूर्वाग्रह धराशायी हो जाते हैं।

केरल की जानकी अम्मल पहली महिला वैज्ञानिक थीं जिन्हें ओरिएन्टल बारबूर छात्रवृत्ति से नवाज़ा गया था। उन्होंने 1934 में डीएससी की उपाधि प्राप्त की और एक विख्यात वनस्पति वैज्ञानिक बनीं। उन्होंने अपने अनुसंधान के क्षेत्र में मौलिक कार्य किया।

भारतीय महिला वैज्ञानिक एक-दूसरे के पक्ष में बोलने से न केवल कतराती हैं, बल्कि प्रायः एक-दूसरे का विरोध करती नज़र आती हैं। महिला वैज्ञानिकों के लिए आरक्षित पुरस्कारों के लिए आवेदन करने से वे इसलिए परहेज़ करती हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे उनके काम पर एक ठप्पा लग जाएगा और माना जाएगा कि वह सामान्य श्रेणी में पुरस्कार पाने के योग्य नहीं था।

एक अन्य जीवनी बी. विजयलक्ष्मी की है जिन्होंने आंतों के कैंसर से पीड़ित होने के बावजूद उच्च ऊर्जा भौतिकी में अनुसंधान कार्य किया। आसीमा चटर्जी एक अन्य पथप्रदर्शक थीं जो किसी भारतीय विश्वविद्यालय (कोलकाता विश्वविद्यालय) से डीएससी की उपाधि प्राप्त करने वाली पहली महिला थीं। उन्होंने आयुर्वेदिक औषधियों पर अथक व मौलिक अनुसंधान करके मिर्गी के लिए आयुष-56 नामक एक दवा विकसित की थी जिसका उपयोग आज भी इस रोग के इलाज में किया जाता है।

आनंदीबाई जोशी देश की पहली एम.बी.बी.एस. महिला थीं। उनका वैवाहिक जीवन कुछ विचित्र जटिलताओं से भरा था। उनके समाज सुधारक पति ने एक ओर तो उन्हें शिक्षा दिलवाई तथा दूसरी ओर उन्हें निरुत्साहित करने में भी भूमिका निभाई।

यदि कोई यह सोचता है कि महिलाएं विवादों में पड़ने से घबराती हैं तो उसका भ्रम इरावती कर्वे के बारे में पढ़कर दूर हो जाएगा। उन्होंने समाज में जाति-आधारित विभाजनों के सांख्यिकीय अध्ययन की जो वकालत की वह आज भी विवाद का विषय बनी हुई है।

महिलाओं के अथक परिश्रम की मिसाल के रूप में अन्ना मणि डॉ. सी.वी.रमन की प्रयोगशाला में कार्यरत भौतिक वैज्ञानिक थीं जिन्हें लालफीताशाही के कारण अपने शोध प्रबंध पर पीएचडी उपाधि नहीं मिल सकी और उन्हें भौतिकी छोड़कर मौसम विज्ञान की ओर मुड़ना पड़ा, किंतु वे बाद में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की उप-महानिदेशक के पद तक पहुंचीं।

पुस्तक के अंत में लेखकों की वर्णक्रम के अनुसार दी गई सूची काफी उपयोगी है। पुस्तक का आवरण और चिकना कागज़ इसे आकर्षक बनाते हैं। क्या इस पुस्तक को उन सब तक पहुंचाने का कोई तरीका हो सकता है जो इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे?

इस पुस्तक की एक सम्पादक, डॉ. रोहिणी गोडबोले, जो एक प्रमुख पार्टीकल भौतिक शास्त्री हैं, का कहना है कि भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा दिए गए अनुदान से भारतीय विज्ञान अकादमी ने 1000 प्रतियां उन व्यक्तियों तक पहुंचाना शुरू कर दिया है जो इससे लाभान्वित हो सकते हैं। इन जीवनियों के संक्षिप्त मराठी अनुवाद जनवरी 2009 से लोकसत्ता नामक मराठी अखबार में हर शनिवार प्रकाशित हो रहे हैं। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में इस पुस्तक का अनुवाद करने के लिए सुझाव भी प्राप्त हो रहे हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

यह लेख पहले नेचर (इंडिया) में प्रकाशित हुआ था।

वर्ग पहेली 57 का हल

स्वा	इ	न	फ्लू			लो		स
ति		ह			ह	री	ति	मा
	श	र	ब	त				प
ए			च		हा	थी	पां	व
ड्स			प	ह	र			र्त
वा	यु	या	न		मो			क
य				मा	न	सि	क	
र	ज	स्व	ला			ता		गा
स		र			का	र	ना	मा